इकाई 37 महादेवी वर्मा

इकाई की रूपरेखा

37.0 उद्देश्य

37.1 प्रस्तावना

37.2 पृष्ठभूमि

37.2.1 महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय

37.2.2 महादेवी वर्मा का साहित्य-परिचय

37.3 महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य : विविध रूप

37.3.1 रेखाचित्र और संस्मरण

37.3.2 निबंध और आलोचना

37.4 महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य की विशेषताएँ

37.4.1 चित्रांकन

37.4.2 कवित्व

37.4.3 संवेदना

37.4.4 यथार्थ के प्रति आग्रह

37.4.5 भाषा-शैली

37.5 नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

37.5.1 जनसाधारण

37.5.2 नारी

37.5.3 सामाजिक रूढ़ियाँ

37.6 सारांश

37.7 शब्दावली

37.8 उपयोगी पुस्तकें

37.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

37.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का अध्ययन करने जा रहे हैं। इसे पढ़ने के बाद आप :

- महादेवी वर्मा के जीवन और साहित्य का वर्णन कर सकेंगे;
- महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य के विविध रूपों, यथा रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और आलोचना पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- महादेवी वर्मा के गद्य की विशेषताओं को रेखांकित कर सकेंगे; और
- नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का मूल्यांकन कर सकेंगे।

37.1 प्रस्तावना

यह इस खंड की आखिरी इकाई है। इसमें हम महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का अध्ययन करने जा रहे हैं। इससे पहले इस खंड में आप प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" और सुमित्रानंदन पंत के साहित्य का अध्ययन कर चुके हैं।

इस इकाई में हम सबसे पहले महादेवी वर्मा के युग की जानकारी हासिल करेंगे। इसी क्रम में महादेवी के जीवन और साहित्य का भी परिचय प्राप्त किया जाएगा।

महादेवी वर्मा ने एक ओर काव्य रचना की तो दूसरी तरफ सामाजिक यथार्थ को सामने रखने के लिए उन्होंने गद्य का सहारा लिया। उन्होंने अपने रेखाचित्रों, संस्मरणों, निबंधों और आलोचना के माध्यम से समाज और खासकर दलित और नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र और संस्मरण एक दूसरे में घुले—मिले हुए हैं। "अतीत के चलचित्र", "स्मृति की रेखाएँ" और "पथ के साथी" इसके सशक्त उदाहरण हैं। इन रचनाओं में चित्रांकन भी है और अतीत को याद करने का सक्षम प्रयास भी। उनकी रचनाओं में एक प्रकार की संवेदनात्मक गहराई है। उसमें हास्य—व्यंग्य का पुट भी है और यथार्थ अपनी समस्त प्रखरता के साथ उभर कर सामने आया है।

नारी-चेतना और दलित-चेतना की अभिव्यक्ति महादेवी के साहित्य में बार-बार हुई है। उन्होंने जिन पात्रों का चित्र अपनी रचनाओं में खींचा है। उनमें शोषित स्त्री और दलित समाज के प्रतिनिधियों का बाहुल्य है। नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के काल में प्रमुख शोषित वर्ग—नारी और दलित-पर हो रहे जुल्म पर प्रहार किया गया। इस प्रकार की झलक महादेवी की रचनाओं में भी मिलती है।

आइए, इस इकाई का अध्ययन आरंभ किया जाए।

37.2 पृष्ठभूमि

महादेवी वर्मा एक सफल कवयित्री होने के साथ-साथ एक सिद्धहस्त गद्यकार भी थीं। उनकी कविताओं और गद्य, दोनों में लेखिका की पीड़ा उभरी है। उनकी कविताओं में यह पीड़ा काफी सघन होकर उभरी है। अतः उसमें कवयित्री अंतर्मुखी होती चली गई हैं। पर जब वे गद्यकार के रूप में उपस्थित होती हैं, तो यथार्थ का सीधा सामना करती हुई दीख पड़ती हैं और खुलकर प्रहार करती हैं।

सवाल यह उठता है कि महादेवी की रचनाओं में पीड़ा और वेदना की अभिव्यक्ति इतनी प्रमुखता से क्यों हुई है? महादेवी वर्मा के साहित्य में व्यक्त पीड़ा उनकी अपनी पीड़ा है। यह एक नारी का भोगा हुआ यथार्थ है। भारतीय समाज में नारी को कभी मानवीयता के स्तर पर नहीं आँका गया। नारी को या तो देवी के पद पर प्रतिष्ठित किया या कुलटा कहकर उसका बहिष्कार किया गया। नारी को हमेशा से पुरुषों के संरक्षण में जीना पड़ा। बचपन में वह अपने पिता पर आश्रित रहती है, जवानी में पति का सहारा लेती है और बुढ़ापे में पुत्र के सहारे अपना जीवन-यापन करती है। परंपरा से यह भी माना जाता है कि पति की पूजा करना पत्नी का पहला कर्तव्य होता है। पति की सेवा करके ही उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। परंपरागत ग्रंथों में पति परमेश्वर की पूजा करने वाली स्त्री को पतिव्रता कहा गया है। परिवार में पुत्र और पुत्री के जन्म लेने का असर आप आज भी देख सकते हैं । जहाँ पुत्र के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं, वहाँ बेटी का जन्म लेना मातम से कुछ कम नहीं होता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में भी अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

जन्म लेने से लेकर बुढ़ापे तक स्त्री को विनम्र, सुशील, दयालु, ममताशील आदि होने का उपदेश दिया जाता है। परिवार और समाज उसके सामने सीता और सावित्री का आदर्श रखता है।

स्त्रियों के प्रति इस प्रकार के प्रत्यक्ष भेदभाव के बावजूद 19वीं और 20वीं शताब्दी में नारी के शोषण के विरुद्ध कुछ लोगों ने आवाज उठाई। राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशव चन्द्र सेन, दयानंद सरस्वती आदि समाजसुधारकों ने नारी की दुर्दशा की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया। उन लोगों ने सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, नारी शिक्षा आदि मुद्दों को बड़ी शिद्दत के साथ उठाया।

ऐसी स्थिति में जब कोई स्त्री समाज के बनाए नियमों को तोड़ती है तो उसे समाज और परिवार की अवमानना और आक्रोश का सामना करना पड़ता है। महादेवी जी ने नारी के "घर के बंधन" को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने समाज के रूढ़ बंधनों को तोड़ा और इन सभी बंधनों से मुक्त होकर कर्म—क्षेत्र में कूद पड़ीं।

गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्त्रियों का आह्वान किया। स्त्रियाँ घर चौखट को लांघकर स्वतंत्रता आंदोलन में शमिल हुईं। महादेवी जी पर स्पष्ट रूप से इसका असर पड़ा। उन्होंने अपनी गद्यात्मक रचनाओं में न केवल नारी की समस्याओं को उठाया बल्कि दलित और शोषित वर्ग पर हो रहे जुल्म का भी विरोध किया। उन्होंने साहित्य में नारी और दलित दोनों वर्गो की वकालत की, उनसे अपनी सहानुभूति प्रदार्शित की।

37.2.1 महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में हुआ था। उनका परिवार सम्भ्रान्त और सम्पन्न परिवार था। अपने बचपन को याद करती हुई वे लिखती हैं- "एक व्यापक विकृति के समय, निर्जीव संस्कारों के बोध से जड़ीभूत वर्ग में मुझे जन्म मिला है, परंतु एक ओर साधनाभूत आस्तिक और भावुक माता और दूसरी ओर सब प्रकार की साम्प्रदायिकता से दूर कर्मनिष्ठ एवं दार्शनिक पिता ने अपने-अपने संस्कार देकर मेरे जीवन को जैसा रूप दिया उससे भावुकता बुद्धि के कठोर धरातल पर, साधना एक व्यापक दार्शनिकता पर और आस्तिकता एक सक्रिय पर किसी वर्ग या सम्प्रदाय में न बंधने वालो चेतना पर स्थित हो सकती थी।"

महादेवी वर्मा की आरंभिक शिक्षा इन्दौर में हुई। फिर प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने बी.ए. और बाद में संस्कृत से एम.ए. किया। उसी समय ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या नियुक्त हुईं।

महादेवी जी का विवाह वयस्कता से पूर्व अल्पावस्था में ही कर दिया गया। पर उन्होंने गार्हस्थ्य स्वीकार नहीं किया और न अपने को उन्होंने सीमित परिवार की परिधि में ही बाँधा। पर इसका मतलब यह नहीं है कि उनका परिवार था ही नहीं। उनका परिवार बड़ा विशाल था और उसमें केवल स्त्री-पुरुष ही नहीं बल्कि फूल, वृक्ष और चिड़ियाँ भी आती थीं। इनकी सहानुभूति विश्व-व्यापी थी। विश्व के किसी कोने से किसी भी पीड़ा की कहानी सुनकर इनका मन उसकी पीड़ा में डूब जाता था। अपने द्वारा वे किसी को भी पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहती थीं, इसीलिए वह कभी भी आदमी से खींचे जाने वाले रिक्शे पर नहीं बैठती थीं।

महादेवी जी राष्ट्र-सेविका भी थीं। जब कभी देश में कोई आंदोलन छिड़ा या देशवासियों पर कहीं कोई विपत्ति आ पड़ी तो उन्होंने केवल अपनी लेखनी के माध्यम से ही शाब्दिक सहानुभूति नहीं प्रकट की बल्कि उसमें अपना सक्रिय सहयोग भी दिया।

1942 के आंदोलन के दौरान ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति ने अपने जुल्म से कई लोगों को मार डाला और कई परिवार बेघर और बे-आसरा हो गए। ऐसी अवस्था में उन्होंने बेसहारों को भोजन और कपड़ा पहुँचाया और जलती हुई दोपहरी में गाँव की धूल छानी। जब बंगाल में अकाल पड़ा था तो उन्होंने अकाल पीड़ितों के लिए कपड़े, भोजन और दवाइयों का इंतज़ाम किया था। उन्होंने "बंग दर्शन" नामक पुस्तक का संपादन किया और इसका पूरा पैसा अकाल-पीड़ितों के सहायता-कोष में दे दिया।

नोआखाली पीड़ितों के लिए महादेवी जी ने हिंदी के लेखकों से पैसा इकट्ठा किया और लेखक-निधि के नाम से हिंदी लेखकों की सहानुभूति के रूप में वहां भेजा।

हिंदी के साहित्यकारों की दशा सुधारने के लिए उन्होंने अन्य साहित्यकारों के साथ मिलकर "साहित्यकार संसद" नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य साहित्यिकों को संगठित करना और असमर्थ साहित्यकारों को सहायता पहुँचाना था।

महोदवी वर्मा को उनकी काव्य-कृति "यामा" के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

37.2.2 महादेवी वर्मा का साहित्य-परिचय

महादेवी वर्मा छायावादी कवियों में प्रमुख हैं।

महोदवी वर्मा ने अपने काव्य-जीवन का आरंभ ब्रजभाषा में समस्या-पूर्ति के साथ किया। फिर खड़ी बोली में रोला और हरिगीतिका छंद में कविता लिखनी शुरू की । उसी समय माँ से सुनी एक करुण कथा को आधार

बनाकर एक खंड काव्य भी लिख डाला। विद्यार्थी जीवन में वे प्रायः राष्ट्रीय और सामाजिक जागृति की कविताएँ लिखती रहीं जो लेखिका के कथनानुसार "विद्यालय के वातावरण में खो जाने के लिए लिखी गयी थीं। उनकी समाप्ति के साथ ही मेरी कविता का शैशव भी समाप्त हो गया।"

मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने से पहले वे रहस्यानुभूति से युक्त कविताएँ लिखने लगी थीं। उनके प्रथम काव्य-संग्रह -- "नीहार" की अधिकांश कविताएँ उसी समय की हैं। उनके पाँच काव्य- संग्रह हैं- नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1935), सांध्य गीत (1936), और दीपशिखा "यामा" में उनके प्रथम काव्य-संग्रहों की कविताओं का एक साथ संकलन हुआ है।

महादवी वर्मा कवि के अतिरिक्त सशक्त गद्य लेखिका भी हैं।"अतीत के चलचित्र" (1941),"स्मृति की रेखाएँ (1943),"शृंखला की कड़ियाँ" (194) "पथ के साथी" (1956) उनके प्रमुख गद्य संकलन हैं। इसके अतिरिक्त कविता-संग्रहों की भूमिकाओं में उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का भी पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है।

आजादी का शंख फूंकने में "चाँद" पत्रिका का योगदान अभूतपूर्व रहा है। "चाँद" के "फांसी" अंक ने तो काफी ख्याति प्राप्त की । इस पत्र ने एक तरफ देश को आजादी की करवट लेने के लिए सचेत किया, वहाँ दूसरी ओर सामाजिक क्रांति का शंखनाद भी किया। महादेवी वर्मा ने भी इस पत्र का संपादन किया। संपादकीय के रूप में लिखे उनके लेख "शृंखला की कड़ियाँ" में संकलित हैं।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार विकल्प सुझाए गए हैं। आप सही विकल्प के सामने सही (√) का चिह्न लगाइए:

1. महोदवी वर्मा का जन्म कब हुआ?
   (क) 1897
   (ख) 1905
   (ग) 1907
   (घ) 1910

2. महादेवी वर्मा का जन्म स्थान कौन–सा है?
   (क) गाज़ियाबाद
   (ख) फर्रुखाबाद
   (ग) पानीपत
   (घ) पटना [ ]

3. महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में कौन-सा तत्व प्रमुख है?
   (क) रहस्य
   (ख) यथार्थ
   (ग) कल्पना
   (घ) कहानी [ ]

4. महादेवी वर्मा के जीवन और साहित्य का दस पंक्तियों में उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

37.3 महादेवी वर्मा का गद्य साहित्यः विविध रूप

महादेवी वर्मा की गद्य-कृतियों की संख्या ज़्यादा नहीं है। पर कथ्य और प्रस्तुति की दृष्टि से ये कृतियाँ उत्कृष्ट हैं। उन्होंने कुल 25 संस्मरणात्मक-रेखाचित्र और 35 निबंध लिखे हैं। उन्होंने मुख्य रूप से रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और आलोचनाएँ लिखी हैं। महादेवी जी का गद्य उनकी वैचारिक विवशता का परिणाम है। नारी जीवन और समकालीन यथार्थ पर लिखते समय उन्होंने गद्य का आश्रय लिया। काव्य-कृतियों की भूमिका में उनकी आलोचना-शक्ति का भी परिचय मिलता है। "स्मृति की रेखाएँ","अतीत के चलचित्र" और "पथ के साथी" में लेखिका का संस्मरण शब्द-चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। "शृंखला की कड़ियाँ" में महोदवी वर्मा का नारी विषयक दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। वस्सतुतः यह नारी समस्याओं का दस्तावेज़ है।

हम यहाँ महादेवी के गद्य साहित्य का विवेचन दो भागों में करने जो रहे हैं- रेखाचित्र-संस्मरण और निबंध-आलोचना। महादेवी वर्मा का रचनाओं को देखने के बाद रेखाचित्र-संस्मरण को एक ही घड़े में रखना उपयुक्त होगा क्येंकि उनके रेखचित्र संस्मरण हैं और उनके संस्मरण रेखचित्र। इसे और भी स्पष्ट करने के लिए यह कहना उपयुक्त होगा कि उन्होंने अपने संस्मरणों को रेखाचित्रों और शब्द-चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। तो चलें, इनका अवलोकन शुरू किया जाए।

37.3.1 रेखाचित्र और संस्मरण

रेखाचित्र और संस्मरण के क्षेत्र में महादेवी वर्मा के तीन ग्रंथ—"अतीत के चलचित्र", "स्मृति की रेखाएँ" और "पथ के साथी" उल्लेखनीय हैं। महादेवी जी की इन रचनाओं में एक चित्रात्मकता, कथात्मकता और काव्य-प्रवाह है। इसलिए इन्हें पढ़ते व्क़्त कभी ये रचनाएँ रेखाचित्र प्रतीत होती हैं तो कभी संस्मरण; कभी-कभी ये कहानी से भी नाता जोड़ने लगती हैं। महादेवी वर्मा इन रेखाचित्रों के साथ कठोर धरती पर उतरी हैं, अतः दीन-हीन, पतित और अपेक्षित व्यक्तित्व इन रेखाओं एवं चित्रों के कलेवर में साँस भरते दीखते हैं। इन रचनाओं की प्रमुख विशेषता इनकी चित्रात्मकता ही है। आइए, इन रचनाओं का अलग-अलग परिचय प्राप्त करें।

अतीत के चलचित्र

"अतीत के चलचित्र" महादेवी जी के रेखाचित्रों का पहला संकलन है। इसका प्रकाशन पहली बार 1941 ई. में हुआ था।

"अतीत के चलचित्र" नाम से ही स्पष्ट है कि ये अतीत के दस्तावेज़ भी हैं और घूमते-फिरते चित्र भी। इस कृति में ग्यारह रचनाएँ संग्रहीत हैं। इसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य एक-दूसरे में सिमट गया है।

अतीत के इन चलचित्रों में सर्वहारा वर्ग की झांकी प्रस्तुत की गई हैं। इसमें रामा, एक विधवा युवती, बिंदा, सबिया, बिट्टो, अनाहूत की माँ, घीसा, विधवा, अलोपी, बदलू, रधिया और लछमा का रेखाचित्र खींचा गया है, जिसमें लेखिका का अतीत स्पष्ट रूप से झांकता नज़र आता है।

स्मृति की रेखाएँ

महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का दूसरा संग्रह है " स्मृति की रेखाएँ। इसका प्रथम प्रकाशन 1945 ई. में हुआ। इसमें कुल सात रेखाचित्र संकलित हैं- भक्तिन, चीनी, जंगिया-धनिया, मुन्नू की माँ, ठकुरी बाबा, बरेठिन गुंगिया। लेखिका ने उन्हें शीर्षकों में विभाजित नहीं किया है, पर इन शीर्षकों का आम तौर पर उपयोग किया जाता है, इसलीए हम भी उसका लाभ उठा रहे हैं। "अतीत के चलचित्र" में जहाँ लेखिका के किशोर काल के चित्र है वहाँ "स्मृति की रेखाएँ" में प्रौढ़ काल के चित्र हैं।

पथ के साथी

"पथ के साथी" का प्रकाशन काल 1956 ई. है। इस संकलन में लेखिका ने अपने समसामयिक कवियों के जीवन-वृत्त, परिवेश और क्रियाकलाप का चित्रण और मूल्यांकन किया है। लेखिका ने कुल सात लेखकों की जीवनी प्रस्तुत की है। कवीन्द्र रवीन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत और और सियारामशरण गुप्त। वस्तुतः इन शीर्षकों के तहत इन लेखकों का " लाइफ स्केच" खींचा गया है।

37.3.2 निबंध और आलोचना

निबंध और आलोचना के क्षेत्र में महादेवी वर्मा की चार पुस्तकों की चर्चा की जा सकती है: (1) शृंखला की कड़ियाँ (1942), (2) क्षणदा (1956), (3) साहित्यकार की आस्था, (4) संकल्पिता (1969)। इसके अलावा उन्होंने अपनी काव्य-पुस्तकों की भूमिका के रूप में भी अपनी आलोचना-क्षमता का प्रमाण दिया है।

शृंखला की कड़ियाँ

शृंखला की कड़ियाँ" में कुल ग्यारह निबंध संग्रहीत हैं। ये निबंध मूलतः "चाँद" के संपादकीय के रूप में लिखे गये थे। इसमें संकलित निबंध इस प्रकार हैं:

1. शृंखला की कड़ियाँ 2. युद्ध और नारी 3. नारीत्व का अभिशाप 4.आधुनिक नारी. 5. घर और बाहर 6. हिंदू स्त्री का पत्नीत्व 7. जीवन का व्यवसाय 8. स्त्री के अर्थ-स्वातंत्र्य का प्रश्न 9. हमारी समस्याएँ 10. समाज और व्यक्ति 11. जीने की कला।

   शृंखला की कड़ियाँ में जनता (खासकर नारी) का पीड़ित स्वर मुखरित हुआ है।

क्षणदा

"क्षणदा" (1956) महादेवी वर्मा का दूसरा निबंध संग्रह है। इसमें विचारात्मक निबंध भी हैं, यात्रा-संस्मरण भी हैं, आलोचनात्मक निबंध भी हैं और भाषा, विज्ञान, साहित्य आदि से संबंधित निबंध भी हैं। इनका शीर्षक इस प्रकार है-1. करुणा का संदेश वाहक 2. संस्कृति का प्रश्न 3. कसौटी पर 4. दोष किसका? 5. कुछ विचार 6. स्वर्ग का एक कोना 7. सुई दो रानी 8 कला और चित्रमय साहित्य 9 साहित्य और साहित्यकार 10. अभिनय कला 11. हमारा देश और राष्ट्रभाषा 12. हमारे वैज्ञानिक

साहित्यकार की आस्था" और "संकल्पिता" में भी साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों से संबंधित निबंध संकलित हैं।

बोध प्रश्न

5. महादेवी वर्मा ने गद्य की कौन-कौन सी विधा में लेखन किया है? (दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

   ....

   ....

6. निम्नलिखित में से कौन रेखाचित्र नहीं हैं (सही उत्तर के सामने सही का निशान (√) लगाइए)

   (क) अतीत के चलचित्र

   (ख) स्मृति की रेखाएँ

   (ग) शृंखला की कड़ियाँ

   (घ) पथ के साथी

7. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र में किस वर्ग का चित्र ज़्यादा हुआ है।
   (सही उत्तर के सामने सही (√) का निशान लगाइए)

   (क) आभिजात्य वर्ग

   (ख) पीड़ित नारी

   (ग) पुरुष

   (घ) सामंत वर्ग

8. महादेवी वर्मा की तीन गद्य रचनाओं का उल्लेख कीजिए:

   क. ....

   ख. ....

   ग. ....

37.4 महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य की विशेषताएँ

अभी आपने महादेवी वर्मा के गद्य के विविध रूपों का परिचय प्राप्त किया। अब हम इन गद्य-रूपों की विशेषताओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

37.4.1 चित्रांकन

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य, खासकर रेखाचित्रों और संस्मरणों, में एक प्रकार का चित्रांकन देखने को मिलता है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण और कलापूर्ण रेखांकन इन कृतियों की विशेषता है। सुभद्राकुमारी चौहान हो या जयशंकर प्रसाद, रामा हो या मुन्ना की माई सबका सूक्ष्म पर्यवेक्षण और कलापूर्ण रेखांकन लेखिका ने किया है। सुभद्राकुमारी चौहान का चित्रांकन करती हुई महादेवी जी लिखती हैं:

"मझोले कद तथा उस समय की कृश देह-यष्टि में कुछ ऐसा उग्र या रौद्र भाव नहीं था, जिनकी हम वीर-गीतों की कवयित्री में कल्पना करते हैं। कुछ भोला मुख, चौड़ा माथा, सरल भृकुटियाँ, बड़ी भाव-स्नात आँखें, छोटी सुडौल नासिका, हँसी को जगाकर गढ़े हुए होठ और दृढ़तासूचक बुद्धि। सब कुछ मिलकर एक अत्यंत निश्छल, कोमल, उदार व्यक्तित्व वाली भारतीय नारी का ही पता देते थे, पर उस व्यक्तित्व के बाहर जो बिजली का छंद था, उसका पता तो तब मिलता था जब उनके और निश्चित लक्ष्य के बीच में कोई बाधा आ उपस्थित होती थी।"(पथ के साथी)

अपने सेवक रामा के रूपांकन में उन्होने अदभुत चित्रांकन की क्षमता दिखाई है:

" किसी थके झुंझलाए शिल्पी की अंतिम भूल जैसी अनगढ़ मोटी नाक, साँस के प्रवाह से फैले हुए-से नथुने हँसी से भरकर धुले हुए-से होंठ तथा काले पत्थर की प्याली में दही की याद दिलाने वाली सघन और सफेद दंत पंक्ति।"

लेखिका की पर्यवेक्षण और चित्रांकन-शक्ति के साथ उसकी कल्पना शक्ति की भी दाद देनी होगी।

37.4.2 कवित्व

महादेवी वर्मा अपने गद्य साहित्य में यथार्थ की कठोर ज़मीन पर खड़ी दीख पड़ती हैं, भाषा में यथार्थ की कठोरता भी है। पर इस भाषा में ऐसा प्रवाह है, ऐसा बहाव है कि उनका गद्य काव्य बन जाता है। यह गद्य-काव्य खासकर प्रकृति-चित्रण के समय मुखर हो उठता है:

"वैशाख नए गायक के समान अपनी अग्नि-वीणा पर एक-से एक लंबा आलाप लेकर संसार को विस्मित कर देना चाहता था। "(अतीत के चलचित्र "वह गोधूलि मुझे अब नहीं भूली। संध्या के लाल सुनहली आभा वाले उड़ते हुए दुकूल पर रात्रि ने मानो छिपकर अंजन की मूठ चला दी हो।")

37.4.3 संवेदना

महादेवी के गद्य में संवेदना और भावुकता का मिला-जुला रूप देखने को मिलता है। यह संवेदना कहीं निराशा में परिणत होकर कारुणिक हो जाती है और कहीं विद्रोह और आक्रोश के रूप में प्रकट होती है। लेखिका की संवेदनात्मक अनुभूतियाँ प्रायः उन पात्रों के प्रति प्रकट हुई हैं जो शोषित हैं पर अपने शोषण से अनजान हैं। रामा, घीसा, अनुहूत की माँ, अलोपी, सभी समाज के शोषित और पीड़ित प्राणी हैं। यहाँ महादेवी की वेदना संवेदना में ढलकर संपूर्ण शोषित मानव समाज के प्रति समार्पित है। महादेवी वर्मा की यह सहानुभूति केवल बौद्धिक स्तर पर नहीं है बल्कि वे इनसे रागात्मक रूप में जुड़ी हुई भी हैं।

37.4.4 यथार्थ के प्रति आग्रह

महादेवी वर्मा ने जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने के लिए गद्य का सहारा लिया। उन्होंने अपने गद्य साहित्य के माध्यम से दीन-दलितों की दुर्दशा का चित्रण किया है। महादेवी का यथार्थ मूलतः ऐसे पीड़ित जन-समुदाय को संबोधित है जो समाज की दृष्टि से हीन होकर भी मानवता के आदर्श हैं और महान हैं। उनकी "लछमा" नामक पहाड़िन पात्र तीन दिन भूख से पीड़ित होकर अंत में मिट्टी खाने को बाध्य होती है-"जब भूख हुई, तब पीली मिट्टी का एक गोला बनाकर मुख में रखा और आँख मूंदकर सोचा-लड्डू खाया, लड्डू खाया । बस, फिर बहुत-सा पानी लिया ओर सब ठीक हो गया।'- (अतीत के चलचित्र)

महादेवी वर्मा ने अपनी कृतियों में काछी, कुम्भार, धोबी, भंगी, बढ़ई, कुली, कबाड़ी, अहीर, भिखारी, वेश्या, अंधे, गूंगे, अकाल-वैधव्य से पीड़ित और जारज संतानों को ढोती नारियाँ, स्नेह की भूखी तथा कथित कलंकिनी स्त्रियाँ, चोर, डकैत, जुआरी, शराबी सबका यथार्थ खाका महादेवी वर्मा ने खींचा है।

37.4.5 भाषा और शैली

महादेवी वर्मा के गद्य की भाषा और शैली पर विचार किए बिना उनके गद्य की विशेषताओं का अध्ययन अधूरा रहेगा।

महादेवी वर्मा के रेखचित्रों में एक प्रकार का कहानीपन होता है।"अतीत के चलचित्र" और "स्मृति की रेखाएँ" में कहानी के तत्व मौजूद हैं। "पथ के साथी" भी इस गुण से अछूता नहीं रहा है।

अपने रेखाचित्रों में महादेवी जी ने कई पात्रों को अमर और जीवंत बना दिया है। उन्होंने अपने रेखाचित्रों में 25 पुरुषों-स्त्रियों के चित्र उकेरे हैं। महादेवी के इन पात्रों में अनेकरूपता है और ये निर्जीव पात्र न होकर सजीव ओर सक्रिय हैं।

महादेवी वर्मा ने अपने गद्य को सरल और जीवंत बनाकर प्रस्तुत किया है। उनके गद्य में यथार्थ की प्रखरता भी है काव्य की मधुर धारा भी। वे विवरण में ज़्यादा नहीं पड़तीं, बल्कि संकेत से ही बहुत कुछ कह जाती हैं। जैसे "रामा की कोठरी में महाभारत के अंकुर जमने लगे। " संक्षेप में उनके रेखाचित्रों में सूक्ष्म चित्रण की प्रधानता है। शब्दों के चित्र बना बनकर उन्होंने परोसे हैं।

महादेवी वर्मा ने अपनी साहित्य में हास्य ओर व्यंग्य का भी समावेश किया है। रामा का कुर्ता, साफा, बुंदेलखंडी जूते और गठीली लाठी किसी शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा करते जान पड़ते थे। "उनकी अखण्ड प्रतीक्षा

और रामा की अटूट उपेक्षा से द्रवित होकर ही कदाचित् हमारी कार्यकारिणी समिति में यह प्रस्ताव नित्य सर्वमत से पास होता रहता था कि कुरते की बाहों में लाठी को अटकाकर खिलौनों का परदा बनाया जावे, डलिया साफे को खूँटी से उतारकर उसे गुड़ियों का हिंडोला बनाने का सम्मान दिया जावे और बुंदेलखंडी जूतों को हौज में डालकर गुड्डों के जल-विहार का स्थायी प्रबंध किया जावे, पर रामा अपने अंधेरे दुर्ग में चर्रमर्र स्वर में डाटते हुए द्वारा को इतनी ऊँची अर्गला से बंद रखता था कि हम स्टूल पर खड़े होकर भी छापा न मार सकते थे। "(अतीत के चलचित्र) इसी प्रकार के अनेक प्रसंग महादेवी जी ने हास्य के पुट के साथ पेश किया है।

महादेवी जी का व्यंग्य भी बहुत पैना होता है। उसमें आक्रोश की ध्वनि भी सुनाई पड़ती है। कवियों की वेशभूषा और उपनामों पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं--"किसी के नए सिले सूट की अंग्रेजियत ताम्बूल राग की स्वदेशीयता में रंजित होकर निखर उठी थी। किसी का चीनाशुक का लहराता हुआ भारतीय परिधान सिगरेट की धूम रेखाओं में उलझकर रहस्यमय हो रहा था। किसी के सिल्की शैम्पू से धुली सीधी लटों का कृत्रिम कुंचन 1... आज के कवि गुण में अकिंचन और रूप में कोयले के समान होकर भी नाम से हीरालाल और उपनाम से शरदेन्दु बन जाते हैं। "(स्मृति की रेखाएँ)

स्पष्ट रूप में महादेवी वर्मा के हास्य व्यंग्य में विद्रोह की प्रतिध्वनि है।

महादेवी की भाषा सहज पर कवित्वपूर्ण है। उनकी भाषा में वक्रता और उक्तिवैचित्र्य तो है पर उलझाव नहीं है। वे अभिधा से ज्यादा व्यंजना से संपृक्त भाषा का उपयोग करती हैं। भाषा के लालित्य का एक उदाहरण द्रष्टव्य है:

फागुन के गुलाबी जाड़े की वह सुनहली संध्या...सवेरे के पुलक पंखी वैतालिक एक लयवाही उड़ान में अपने-अपने नीड़ों की ओर लौट रहे थे। विरल बादलों के अंतराल से उनपर चलाए हुए सूर्य के सोने के शब्द-बेधी बाण उनकी उन्मद गति में ही उलझ-उलझकर लक्ष्य-भ्रष्ट हो रहे थे। "(अतीत से चलचित्र)

महादेवी की भाषा में एक लय, संगीत और चित्रात्मकता है। उनका एक-एक वाक्य एक-एक चित्र के समान है। उन्होंने रेखाओं में भावना और कल्पना के रंग भरे हैं और ये रंग शब्दों के माध्यम से ही अभिव्यक्त हुए हैं।

बोध प्रश्न

9. महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए (उत्तर लगभग पन्द्रह पंक्तियों में दीजिए)।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

10. महादेवी वर्मा के गद्य की भाषा पर टिप्पणी कीजिए (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

37.5 नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

महादेवी वर्मा ने अपने गद्य साहित्य के द्वारा नारी चेतना और दलित चेतना को अभिव्यक्ति दी है। नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान प्रमुख शोषित वर्ग (नारी और दलित) पर हो रहे जुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाई गई। महादेवी वर्मा ने भी अपनी रचनाओं में इनके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की है और उन पर हो रहे जुल्म पर आघात किया है।

इस दृष्टि से उनकी तीन कृतियाँ उल्लेखनीय हैं:

1. स्मृति की रेखाएँ
2. अतीत के चलचित्र
3. शृंखला की कड़ियाँ

जैसा कि आपको पहले बताया जा चुका है पहली दो कृतियाँ रेखाचित्र हैं और तीसरी कृति में ग्यारह निबंध संकलित हैं। "स्मृति की रेखाएँ" और "अतीत के चलचित्र" में समाज के शोषित और पीड़ित लोगों का चित्रांकन हुआ है। ये सभी पात्र किसी न किसी रूप में महादेवी वर्मा से जुड़े हैं। अतः इन रचनाओं में एक प्रकार की आत्मीयता और अपनापन का बोध होता है। इन पात्रों की पीड़ा महादेवी वर्मा को अपनी पीड़ा बन गई है। सबसे बड़ी बात कि इसके माध्यम से तत्कालीन यथार्थ प्रखरता के साथ उभरकर सामने आया है।

"शृंखला की कड़ियाँ" में संकलित लेख मुख्य रूप से नारी समस्या को केंद्र में रखकर लिखे गए हैं। ये लेख "चाँद" पत्र के संपादकीय के रूप में लिखे गए थे। इन लेखों में जनता का पीड़ित स्वर मुखरित हुआ है। इसमें महादेवी का विद्रोह स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

आइए, इस तथ्य की छानबीन करने का प्रयास किया जाए कि किस प्रकार महादेवी वर्मा ने समाज के उपेक्षित वर्ग का मसला उठाया है और इस संदर्भ में उनकी दृष्टि क्या रही है। सबसे पहले हम जन-साधारण को ही ले लें।

37.5.1 जन-साधारण

"अतीत के चलचित्र" और "स्मृति की रेखाएँ" में आम आदमी केंद्र में है। आम आदमी नंगा—भूखा है, गरीब है, फटेहाल है। इनके साथ महादेवी वर्मा की संवेदना जुड़ गई है। उनका सरल, तरल और सजीव, स्नेह, भूखे, नंगे बालकों कों देखकर उमड़ पड़ता है। पहाड़ पर रहने वाले गरीब लोगों की दरिद्रता को देखकर उनका हृदय छलनी हो जाता है। वे लिखती हैं:

" कोई टाट का सिला विचित्र पैजामा और फटे हुए काले खुरदरे कम्बल का गिलाफ जैसा कुरता गले में लटकाए "भालू" समान घूम रहा है। कोई कोपीनधारी तार-तार फटा सूती कोट पहने कमर में बोझ बांधने की मोटी रस्सी लपेटे और रूखे खड़े बालों को खुजलाता हुआ "सेही" जैसी कांटेदार जन्तु जान पड़ता है। किसी के कठिन एड़ी और ऐंठी फैली उँगलियों वाले पैर सड़क कूटने के दुर्मुट से स्पर्धा करते हैं और किसी के स्वरचित मूँज की खुरदरी चट्टी में सिकुड़-बाँधकर पंजे की भ्रांति उत्पन्न करते हैं। ...पर्वतीय पथ और पत्थरों की चोट से टूटे हुए नाखून और चुटीली उँगलियों के बीच में ढाल बनी हुई मूँज की चप्पल मानो मनुष्य को पशु बनाकर भी खुद न देने वाले परमात्मा का उपहास कर रही थी। पाँव से दो बालिश्त ऊँचा और ऊनी-सूती पैबंदों से बना हुआ पैजामा मनुष्य की लज्जाशीलता की विडम्बना जैसा लगता था। किसी से कभी मिले हुए पुराने कोट में नीचे के मटमैल अस्तर की झांकी देती हुई अपनी तरह तार-तार फटकर झालरदार हो उठी थी और वह अपने पहनने वाले को एक झबरे जन्तु की भूमिका में उपस्थित करती थी. कोई धूप में बैठकर कपड़ों में से जुएँ बीनता हुआ वानर का स्मरण दिलाता है और कोई दूकानदार से माँग-चाँगकर मुख तथा हाथ-पैर में मले हुए तेल के कारण जल से बाहर निकले हुए जल-जन्तु की तरह चमकता है। ये भी मनुष्य हैं- इसे हम अभ्यासवश ही समझते हैं- इनमें मनुष्य का रूप पाकर नहीं।"
(स्मृति की रेखाएँ)

आम भारतीय जनता का यह यथार्थ रूप हमें अंदर से कहीं छील जाता है। मनुष्य जन्म पाकर भी ये मनुष्य नहीं जानवर की कोटि में हैं। भारतीय जनता का यह दृश्य लेखिका को पीड़ा से भर देता है। वे समाज के बने-बनाए नियमों और व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह कर बैठती हैं। निरक्षर ग्रामीणों की स्थिति पर क्षुब्ध होकर लेखिका कहती है— "इतने विशाल जन-समूह को वाणीहीन बनाकर जिन्हें अपनी वाग्विदग्धता का अभिमान है, वे कितने निर्लज्ज हैं।" यह कथन लेखिका की व्यवस्था के प्रति असहमति का सूचक है। महादेवी वर्मा की व्यथा—वेदना के पीछे केवल हाहाकार नहीं है, बल्कि उसमें नवनिर्माण का स्वर भी है।

37.5.2 नारी

पीड़ित, शोषित और सताई हुई स्त्रियों का रेखांकन भी महादेवी जी ने किया है और 'शृंखला की कड़ियाँ' नामक उनके संकलन में नारी संबंधी दृष्टिकोण की भी अभिव्यक्ति हुई है। महादेवी जी ने अपने रेखाचित्रों में शोषित, पीड़ित, समाज से बहिष्कृत, बेसहारा और गरीब स्त्रियों को स्थान दिया है। सूखी जटाओं वाली विपन्न ग्रामीण युवतियों, अपर्याप्त वस्त्र पहने तन को ढकती किशोरियों, अकाल वैधव्य से पीड़ित नारियों, जारज सन्तानों की माँ, क्रूर- निष्करुण विमाताओं पर ही महादेवी जी की दृष्टि गई है।

"अतीत के चलचित्र" में एक विधवा का चित्र महादेवी जी ने खींचा हैं। सेठ के पुत्र से ब्याही गई यह किशोरी बाल-विधवा होकर अपना अभिशप्त जीवन बिताती है। इसके जीवन का दर्द महादेवी का अपना दर्द बन जाता है। महादेवी जी ने एक हृदय-स्पर्शी घटना का वर्णन कर पाठक-मन को झकझोर दिया है। एक बार सावन की तीज के अवसर पर वे मेहंदी लगाए, ओढ़नी पहने उसके पास जाती हैं और कौतूहलवश ओढ़नी उसपर डाल देती हैं। "वह क्षण भर के लिए अपनी उस स्थिति को भूल गई जिसमें ऐसे रंगीन वस्त्र वर्जित थे और नए खिलौनों से प्रसन्न बालिका के समान बेसुध मन में उसे ओढ़े, मेरी ठुड्डी पकड़कर खिलखिला पड़ी।"
(अतीत के चलचित्र)

बिंदा महादेवी की बाल सखी थी। बचपन में माँ के गुजरने और विमाता के आगमन ने उसके जीवन को नरक बना दिया। विमाता की उपेक्षा से संत्रस्त होकर वह एक दिन "आकाशवासिनी अम्मा" के पास चली जाती है।

सबिया भंगिन है। एक तो नारी उसपर से दलित। ऐसी स्थिति में उसका दुर्भाग्य तो अपार होना ही था। उसका पति मैकू नाकारा है। सबिया का जीवन असहायता, स्वावलंबन औरआत्म-विर्सजन का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसका पति उसे छोड़कर पलायन कर जाता है। वह दूसरा घर न बसाने की प्रतिज्ञा कर जीविका की खोज शुरू कर देती है। अपने समाज में भी उसकी उपेक्षा होती है। कालांतर में उसे सौत का दुःख भी सहना पड़ता है। उसे चोर की पत्नी कहकर भी प्रताड़ित किया जाता है। पर वह हताश नहीं होती। लेखिका ने इस पात्र के प्रति अपनी घनीभूत समवेदना व्यक्त की है।

इसी प्रकार बिट्टो एक बाल-विधवा है। उसके जीवन की विडम्बना यह है कि दो-दो बार विधवा बनती है। उसे कहीं चैन से जीने नहीं दिया जाता है।

"अनाहूत की माँ" नामक संस्मरण एक मातृ-पितृ हीन, बाल विधवा और वात्सल्य से भरी नारी की करुण कथा है। बालिका के दुर्बल-रक्तहीन पीले मुख, सूखे होंठ और तेलहीन दीपक की बत्ती-सी आँखें देखकर लेखिका का मन विषाद के स्थान पर क्रोध से भर जाता है।

"घीसा" में एक विधवा पर स्वाभिमानिनी अछूत स्त्री की कथा है। इसी प्रकार **विधवा** संस्मरण में एक अनाम स्त्री की करुण कथा आती है जो एक रोगग्रस्त पुरूष की पत्नी है। "लछमा" में एक पहाड़ी लड़की (लछमा) की करूण कहानी कही गई है।

"स्मृति की रेखाएँ" में भी प्रताड़ित और शोषित स्त्रियाँ संघर्ष करती दीख पड़ती हैं। महादेवी वर्मा ने अपनी नारी-पात्रों की बेबसी ही नहीं दिखाई है बल्कि उनके संघर्ष को भी रूपायित किया है। यह मुख्य बात है। "भक्तिन" आजीवन संघर्ष करती है। पति की मृत्यु के बाद भी वह हार नहीं मानती और अपने बलबूते पर बेटी की शादी करती है। पर यहाँ फिर एक पुरूष उसकी बसी-बसाई गृहस्थी उजाड़ देता है। उसका नाकारा दामाद उसे कंगाल कर देता है।

इसी प्रकार मुन्नू की माई अपने को परिवार के प्रति समर्पित कर देती है, त्याग करती है, खुद कष्ट सहती है, पर हताश नहीं होती है। बिबिया एक धोबी की लड़की है। तीन-तीन बार उसकी शादी होती है, पर हर बार उसे पति की प्रताड़ना ही सहनी पड़ती है। कभी उसे झगड़ालू पति मिलता है, तो कभी शराबी-जुआरी, तो कभी वृद्ध निरूपाय। वह अपने जीवन से संघर्ष करते करते थक जाती है और आत्महत्या कर लेती है।

गुंगिया महादेवी वर्मा की ऐसी निरीह पात्र है जो न सुन सकती है और न बोल सकती है। वह महादेवी के जीवन से काफी जुड़ी हुई है। उसके जीवन की त्रासदी भी महादेवी ने पूरी समवेदना के साथ व्यक्त की है।

अपने रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी वर्मा ने नारी जीवन के अनेक चित्र उकेरे है। इसमें जगह-जगह पर उनका नारी संबंधी दृष्टिकोण भी प्रतिबिंबित हुआ है, पर प्रत्यक्ष रूप में यह दृष्टिकोण "श्रृंखला की कड़ियाँ" में अभिव्यक्ति पा सका है। महादेवी जी ने अपने इन लेखों में नारी शोषण पर जमकर प्रहार किया है। महादेवी वर्मा खुद नारी थीं अतः वह नारी के दुःख दर्द को अच्छी तरह समझती थी।

तत्कालीन समाज में नारी की घर और बाहर दोनों जगह एक-सी हालत थी। पिता उसे दुकान में रखी हुई एक बिकाऊ चीज़ समझता था जिसे वह उचित अथवा अनुचित दामों में बेचने में नहीं हिचकता था। पितृ गृह से बिककर वह पति के घर जाती थी, कुछ दिन तो नई "वस्तु" सबको अच्छी लगती थी पर उससे मन ऊब जाता था। लोग उसकी उपेक्षा करने लगते थे। पति को परमेश्वर मानकर पूजती रहे तो परिवार में भी कुछ सम्मान मिल जाता है। महादेवी वर्मा कहती हैः

"हिंदू नारी का घर और समाज, इन्हीं दो से विशेष सम्पर्क रहता है। परंतु इन दोनों ही स्थानों में उसकी स्थिति इतनी करूण है इसके विचार मात्र से ही किसी भी सहृदय का हृदय कांपे बिना नहीं रहता। अपने पितृगृह में उसे वैसे ही स्थान मिलता है जैसा किसी दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता है जिसके रखने और बेचने दोनों ही में दुकानदार को हानि की संभावना रहती है....पति गृह, जहाँ इस उपेक्षित प्राणी को जीवन का

शेष भाग व्यतीत करना पड़ता है, अधिकार में उससे कुछ अधिक परंतु सहानुभूति में उससे बहुत कम, उसमें संदेह नहीं। (शृंखला की कड़ियाँ)

उन्होंने एक कड़वा यथार्थ हमारे समाने रखा है:

"इस समय तो भारतीय पुरूष जैसे अपने मनोरंजन लिए रंग-बिरगें पक्षी पाल लेता है, उपयोग के लिए गाय या घोड़ा पाल लेता है, उसी प्रकार यह एक स्त्री को भी पालता है तथा अपने पालित पशु पक्षियों के समान ही यह उसके शरीर और मन पर अपना अधिकार समझता है।" (शृंखला की कड़ियाँ)

महादेवी वर्मा ने जिस अधिकार के साथ गृहस्थ-नारी पर लिखा है उसी अधिकार के साथ उन्होंने वेश्याओं के बारे में भी लिखा है । समाज का अभिशाप, गंदगी और कीचड़ मानी जाने वाली इन वेश्याओं के प्रति महादेवी जी की सहानुभूति है:

"यदि स्त्री की ओर देखा जाए तो निश्चय ही देखने वाला कांप उठेगा। ......उसे जीवन भर आदि से अंत तक सौंदर्य की हाट लगानी पड़ी। अपने हृदय की समस्त कोमल भावनाओं को कुचलकर, आत्मसमर्पण की इच्छाओं का गला घोंटकर रूप का क्रय-विक्रय करना पड़ा और परिणाम में उसके हाथ आया निराश, हताश, एकाकी अंत ....जीवन की एक विशेष अवस्था तक संसार उसे चाटुकारी से मुग्ध करता रहता है, झूठी प्रशंसा की मदिरा से उन्मत करता रहता है, उसके सौंदर्यदीप पर शलभ-सा मंडराता रहता है, परंतु उस मादकता के अंत में, उस बाढ़ के उतर जाने पर उसकी ओर कोई सहानुभूति भरे नेत्र भी नहीं उठाता।"(शृंखला की कड़ियाँ)

"'इन स्त्रियों ने, जिन्होने गर्वित समाज पतित के नाम से सम्बोधित करता आ रहा है, पुरूष की वासना की वेदी पर, कैसे घोरतम बलिदान दिया है, इसपर कभी किसी ने विचार भी नहीं किया। पुरूष की बर्बरता, रक्त-लोलुपता पर बलि होने वाले युद्ध-वीरों के चाहे स्मारक बनाए जावें, पुरूष की अधिकार-भावना को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रज्ज्वलित चिता पर क्षण भर में जल मिटने वाली नारियों के नाम चाहे इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित रह सकें, परंतु पुरूष की कभी न बुझने वाली वासनाग्नि में हंसते-हंसते अपने जीवन को तिल-तिल जलाने वाली इन रमणियों को मनुष्य जाति ने कभी दो बूँद आँसू पाने का अधिकारी भी नहीं समझा। "(शृंखला की कड़ियाँ)

इस प्रकार महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं में नारी-जीवन के वैषम्य और शोषण को पूरे तीखेपन के साथ अभिव्यक्त किया है। अपने इन लेखों में महादेवी जी ने नारी के प्रति किए जा रहे अत्याचारों का दृढ़ स्वर में विरोध किया है।

37.5.3 सामाजिक रूढ़ियाँ

दलित, उपेक्षित वर्ग तथा नारी समुदाय पर हो रहे जुल्म पर प्रहार करने के साथ-साथ महादेवी वर्मा ने जर्जर समाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार किया है। उनका मानना था कि अतीत और वर्तमान के सुदर संगम से ही विकासोन्मुख भविष्य का निर्माण हो सकता है। पर जीर्ण-संकीर्ण अतीत को ढोना अपने आप को छोटे दायरे में समेटना होगा। अतीत से शिक्षा लेनी चाहिए, उसका अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। महादेवी वर्मा लिखती हैं: "समस्त सामाजिक नियम मनुष्य की नैतिक उन्नति तथा उसके सर्वतोमुखी विकास के लिए आविष्कृत किए गए हैं। जब वे ही मनुष्य के विकास में बाधा डालते रहते हैं, तब उनकी उपयोगिता ही नहीं रह जाती।" (शृंखला की कड़ियाँ) निश्चित रूप से इस संदर्भ में महादेवी वर्मा के विचार प्रगतिशील थे। प्राचीनता और नवीनता को देख परखकर वे आगे बढ़ना चाहती थीं, समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन चाहती थीं।

महादेवी जी ने वर्तमान समाजिक व्यवस्था और परंपरागत संस्कारों पर कहीं इतना दारूण आघात किया है कि पाठक तिलमिला उठता है:

"यदि दुर्भाग्य से स्त्री के मस्तक का सिन्दूर धुल गया तो उसके लिए संसार ही नष्ट हो गया। उनकी आज्ञा है, उनके शास्त्रों की आज्ञा है और कदाचित उनके निर्मम ईश्वर की आज्ञा है कि वे ज़मीन की प्रथम अंगड़ाई को अंतिम प्रणायाम में परिवर्तित कर दें, आशा की पहली सुनहली-किरण को विषाद के निविड़ अंधकार में समाहित कर दें और सुख के मधुर पलकों को आँसुओं में बहा डालें।" (शृंखला की कड़ियाँ)

इन पंक्तियों में लेखिका ने शास्त्रों के बने-बनाए नियमों के प्रति अपनी अनास्था प्रकट की है, इसके साथ-साथ उनका विद्रोह स्वर भी प्रकट हुआ है।

स्पष्ट रूप में वह ईश्वर को निर्मम कहती हैं। कहीं भी कोई भय, कोई संकोच नहीं है। उस जमाने में इस प्रकार की निर्भयता दिखाना कोई मामूली बात नहीं थी। एक तो नारी ओर उसपर ईश्वरीय सत्ता का खंडन ! समाज के बने बनाए नियमों की उपेक्षा ! इस विद्रोह को देखते हुए ही कभी-कभी महादेवी की तुलना मीरा से की जाने लगती है। उन्होने अपने निबंधों में सर्वत्र समाज की ह्रसोन्मुखी विकृतियों का पर्दाफाश किया है।

बोध प्रश्न

11. महादेवी वर्मा के गद्य में नवजागरण ओर राष्ट्रीय चेतना का स्वर किस रूप में मुखरित हुआ है ? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिये)

....

....

....

....

....

12. महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य में आम आदमी का चित्रण किस रूप में किया है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

....

....

....

....

....

13. महादेवी वर्मा के नारी विषयक दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

37.6 सारांश

इस इकाई में आपने महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य का अध्ययन किया । यह पाठ्यक्रम नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना से सम्बद्ध है, अतः इस इकाई में इस बात का हमेशा ध्यान रखा गया है कि महादेवी के गद्य में नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के तत्वों को उजागर किया जाए।

महादेवी के गद्य साहित्य में दलित और पीड़ित समुदाय के प्रति सहानुभूति, समवेदना और उनके शोषण के खिलाफ आक्रोश की अभिव्यक्ति हुई है। रेखाचित्र हो या निबंध, सर्वत्र उन्होंने उपेक्षित वर्ग और नारी समुदाय के कष्टों को प्रकाशित किया है। उन्होंने न केवल इस कष्ट को पाठकों के सामने रखा है बल्कि उन्होंने इन कष्टों के निवारण के उपायों की ओर भी इशारा किया है। उनके साहित्य में केवल वेदना का हाहाकार ही नहीं है बल्कि नवनिर्माण का स्वर भी है। यह नवनिर्माण अतीत और वर्तमान के सुंदर और संतुलित मेल से ही संभव होगा। समाज के रूढ़ और जर्जर मान्यताओं को इसके लिए उखाड़ फेंकना जरूरी है।

महादेवी ने अपने वास्तविक जीवन में समाज के बने-बनाए बंधनों और नियमों को तोड़ा, जिसकी झलक उनके साहित्य में भी मिलती है। उन्होंने हमेशा नारी-स्वातंत्र्य की वकालत की और नारी को शोषण और परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त करने का प्रयास किया। उनकी अपने जीवन की वेदना आम जनता की वेदना से जुड़ गई है, जिससे उनका साहित्य संवेदना और मार्मिकता से संपृक्त हो गया है।

महादेवी वर्मा ने संस्मरण और रेखाचित्र की अद्भुत मिली-जुली विधा विकसित की। "अतीत के चलचित्र", "स्मृति की रेखाएँ" और "पथ के साथी" इसके सुन्दर उदाहरण हैं। 'शृंखला की कड़ियाँ' नारी पीड़ा और विद्रोह का सुन्दर दस्तावेज़ है।

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सूक्ष्म चित्रांकन हुआ है। इसमें एक कविता है, लय है, चित्र है। इसमें संवेदना की लहर है। भाषा में एक प्रकार की व्यंजना और लाक्षणिकता है। इसके बावजूद महादेवी वर्मा के गद्य में यथार्थ के प्रति आग्रह है। यथार्थ का यही स्वर उनके गद्य साहित्य को मज़बूत करता है।

37.7 शब्दावली

अंतर्मुखी	—	भीतर की ओर उन्मुख
अवमानना	—	अपमान
कृशदेह यष्टि	—	दुबला पतला शरीर
जारज-संतान	—	अवैध संतान
दुकूल	—	महीन कपड़ा
दुर्मुट	—	सड़क कूटने का औज़ार
निविड़	—	घना
भाव-स्नात	—	भाव से भीगा हुआ
वाग्विदग्धता	—	वाणी का कौशल
विकृति	—	बिगड़ा हुआ
शिद्दत	—	प्रखर
सम्भ्रान्त	—	प्रतिष्ठित
सर्वतोमुखी	—	चारों ओर फैला हुआ
साधनाभूत आस्तिक	—	साधना करने वाला, ईश्वर मे विश्वास रखने वाला
सेही	—	एक जंतु जिसके शरीर पर काँटे होते हैं।

37.8 उपयोगी पुस्तकें

- **महादेवी का गद्य,** सूर्य प्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- **महादेवी वर्मा,** इन्द्रनाथ मदान(सं0), राधाकृष्ण, प्रकाशन दिल्ली
- **महादवी वर्माः** कवि और गद्यकार, लक्ष्मणदत्त गौतम, कोर्णाक प्रकाशन, दिल्ली.

37.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. ग
2. ख
3. ख
4. देखिए भाग 37.2.1 और 37.2.2
5 रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, आलोचना
6. ग
7. ग
8. स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी
9. चित्रात्मकता, कवित्व,, संवेदना, यथार्थ (देखिए भाग 37.4.)
10 कहानीपन, शब्दचित्र, काव्य-प्रवाह, स्पष्टता और सहजता आदि (देखिए भाग 37.4.)
11. नारी चेतना, शोषित जन-समुदायों के प्रति सहानुभूति और सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह के रूप में (देखिए भाग 37.5)
12. आम आदमी की पीड़ा और दर्द भरा जीवन (देखिए भाग 37.5.1)
13. देखिए भाग 37.5.2